



जनवरी 2020

वर्ष : 3 अंक :4

# सिफरी मासिक समाचार

## नील क्रांति की ओर अग्रसर



### निदेशक की कलम से



आप सभी को नए वर्ष 2020 की ढेरों शुभकामनाएँ।

वर्ष 2020 हम सब के लिए एक नया संदेश, नए अवसर, नई चुनौतियां लेकर आया है कि हम पिछले वर्ष में किए गए अपने कार्यों, अपने उत्तरदायित्वों की समीक्षा करें और अधिक ऊर्जावान होकर अपने दायित्वों का निर्वाह करें।



प्रस्तुत मासिक समाचार जनवरी 2020 संस्थान के वैज्ञानिक और तकनीकी गतिविधियों और विशेष समाचारों के बारे में है। इस अंक में सुंदरबन में आए बुलबुल चक्रवात से मात्स्यिकी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन और संस्थान के द्वारा किए गए उपायों के बारे में बताया गया है। मैथन जलाशय में पिंजरा पालन द्वारा प्रजाति विविधिकरण किया गया। अब पिंजरों में पहले से अधिक मत्स्य प्रजातियों का पालन किया जा सकता है जो संस्थान की एक उपलब्धि है। इसी प्रकार वर्ल्डफिश परियोजना के तहत ग्रास कार्प के बीजों का प्रजनन किया गया है।



संस्थान ने कई महत्वपूर्ण बैठकों, संगोष्ठियों, किसान मेला में भाग लिया है जिसमें प्रमुख भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, भुवनेश्वर चैटर द्वारा आयोजित संगोष्ठी है। इसके अलावा संस्थान ने किसानों की आय में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया है। डॉ. जी हुआंग, महानिदेशक, एनएसीए (Network of Aquaculture Centres in Asia-Pacific) ने 12 दिसंबर, 2019 को संस्थान का दौरा किया तथा संस्थान की गतिविधियों की सराहना की।

वर्ष 2020 आप सभी के लिए नए अवसरों से भरपूर हो।

विक्रम

## उष्णकटिबंधीय बाढ़कृत आर्द्रभूमि में छोटे पैमाने पर मात्स्यिकी संवर्धन हेतु पेन में मछली पालन

विश्व में छोटे पैमाने पर होने वाले मात्स्यिकी उद्योग से लगभग 90 प्रतिशत मछुआरे जुड़े हुए हैं। यह एक पारंपरिक मत्स्य पालन विधि है जिसमें अपेक्षाकृत कम पूंजी और ऊर्जा का उपयोग होता है और प्राप्त मछलियों का खपत अधिकतर स्थानीय लोगों द्वारा होता है। हालांकि ऐसा मत्स्य पालन खुला जल संसाधनों के 81 प्रतिशत भाग में किया जाता है और पोषण तथा आजीविका सुरक्षा प्रदान करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है पर अभी तक यह क्षेत्र पूर्ण तौर पर नियमित और प्रबंधित नहीं हो पाया है। यदि संभावनाओं की बात की जाय तो इस विशाल बाढ़कृत क्षेत्र (0.5 मिलियन हेक्टेयर) में इस प्रकार की मात्स्यिकी से उत्पादन वृद्धि के साथ मछुआरों की आय और उनकी गरीबी को कम करने में बहुत अधिक सहायता मिलेगी। इस दिशा में संस्थान के आईसीएआर-सीजीआईआर (विंडो 3) कार्यक्रम के तहत पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के बेलेंडांगा झील में पेन में ग्रास कार्प, *टेनोफेरीगोन्डोन आइडेला* पालन का सफलता पूर्वक प्रदर्शन किया गया। बेलेंडांगा झील 74 हेक्टेयर क्षेत्र में फैली एक मौसमी खुलाजल गोखुर झील है जिसमें मछुआरा सहकारी सोसायटी के सहयोग से मछली पालन किया जाता है। इस ग्रास कार्प का पालन आर्द्रभूमि में छोटे पैमाने पर मत्स्य पालन को बढ़ाने के लिए किया गया था जिसका उद्देश्य जल में मैक्रोफाइट संसाधनों की प्राकृतिक उत्पादकता का उपयोग करना और मैक्रोफाइट प्रसार का अध्ययन करना था। इस पालन में सिफरी एचडीपीई पेन से कुल 151 किलोग्राम मत्स्य बीज का उत्पादन हुआ तथा 60 दिनों के बाद 985 किग्रा बड़ी अंगुलिकाओं को प्राप्त किया गया जिन्हे आर्द्रभूमि में छोड़ा गया।



### मुख्य शोध उपलब्धियां

सुंदरबन में शीत ऋतु में बैंगनेट मत्स्ययन के दौरान यह देखा गया है कि नवंबर 2019 में आई महाविनाशक चक्रवात, बुलबुल के कारण यहाँ मछलियों की उपलब्धता बहुत घट गई है। पकड़ी गई मछलियों में गोल्ड-स्पॉटिड एंकोवी (*कोइला दुसुमिएरी*) की प्रचुरता सबसे अधिक, 40.6 से 52.4% पायी गयी और उसके बाद *हार्पडोन नेहेरेस* (21.4%) दूसरे स्थान पर रहा।

उत्तरकाशी में टोंस नदी में नवंबर -दिसंबर 2019 के दौरान ब्राउन ट्राउट प्रजाति, *ऑकोरिनकस माइकिस* में जननांग परिपक्वता देखी गयी जिससे इस नदी में उक्त प्रजाति के अंडजनन अवधि को जाना जा सकता है।

मैथन जलाशय में पिंजरो में *लेबियो बाटा* (50-60 ग्रा.), *ओमपोक बिमाकुलेटस* (40-50 ग्रा.), *हेटरोनेस्टेस फॉसिलिस* (30-40 ग्रा.) को बड़े आकार तक पाला गया जिसका उद्देश्य पिंजरो में मछली पालन तकनीक के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए प्रजाति विविधीकरण करना था।

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के भंडारदाहा और विशुनपुर आर्द्रभूमि की पारिस्थितिक भेद्यता के अध्ययन से पता चला कि मानवजनित कार्यों के कारण इनकी पारिस्थितिकी कमजोर हो चुकी है। कूचबिहार और उत्तर 24 परगना जिले के आर्द्रभूमि के

पर्यावरणीय प्राचल भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रतिकूल तौर पर अत्यधिक प्रभावित हुये हैं।

### प्रशिक्षण

#### किसानों की आय में वृद्धि के लिए "अंतर्स्थलीय संवर्धित मछलियों का मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" पर प्रशिक्षण

संस्थान ने राष्ट्रीय मत्स्य पालन विकास बोर्ड (एनएफडीवी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित दिनांक 02 - 06 दिसंबर, 2019 के दौरान पांच दिवसीय प्रशिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम (टीओटी) आयोजित किया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक के मार्गदर्शन में "अंतर्स्थलीय संवर्धित मछलियों के लिए मछली का स्वास्थ्य प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य के मत्स्य पालन





विभाग से कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें छत्तीसगढ़ के पांच, हरियाणा के तीन, मध्य प्रदेश, बिहार के दो और तेलंगाना के दो,



पश्चिम बंगाल के तीन उद्यमी और संस्थान के आठ शोध छात्र शामिल थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अंतर्स्थलीय मछलियों में होने वाले रोगों के विभिन्न पहलुओं, पारंपरिक और उन्नत नैदानिक दृष्टिकोण, प्रतिरक्षाविज्ञानी और आणविक निदान, नियंत्रण और उपचार प्रबंधन और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन में जलीय पर्यावरण की भूमिका के साथ घेरे में मछली पालन और जलाशय में पर्यावरण-स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रम में शामिल थे। मछली पालन में बेहतर प्रबंधन के साथ मृदा और जल रसायन विज्ञान और व्यावहारिक संग्रह पर अधिक जोर दिया गया, मछली रोग का निदान और दवाओं और रसायनों के निवारक और उपचारात्मक उपयोग के लिए



संरक्षण भी सिखाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता के डॉ. टी. जे. अब्राहम और डॉ. गदाधर दास ने जीवाणु, परजीवी और फफूंदी रोगों और मछलियों में उनके नियंत्रण और उपचार के बारे में जानकारी दी।

इस प्रशिक्षण के समन्वयक, डॉ. बि. के. बेहरा, प्रधान वैज्ञानिक, और डॉ. ए. के. बेरा तथा संचालक डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक और सुश्री एम. शायी देवी, वैज्ञानिक थे।

### बाजार में संविदा खेती और किसान उत्पादक संगठनों / कंपनियों (FPO / FPCs) के लिंकेज पर नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने दिनांक 28 नवंबर से 1 दिसंबर 2019 के दौरान कृषि व्यवसाय विपणन मंत्रालय (CCS NIAM) द्वारा प्रायोजित बाजार / एफपीसी में किसानों के अनुबंध खेती और लिंकेज पर एक चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण का



उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री सुब्रत मंडल, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, कोलकाता ने किया। श्री मंडल ने प्रशिक्षकों को अपनी उपज के प्रभावी विपणन हेतु सुधार और उन्हें अनुबंध खेती के बारे में जागरूक किया और अपने एफपीओ और एफपीसी में कल्चर-आधारित मत्स्य प्रबंधन प्रणाली के समग्र विकास के लिए संस्थान और नाबार्ड के साथ सक्रिय संबंध स्थापित करने पर जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य बाजार और मूल्य जोखिम के माध्यम से बेहतर कीमत वसूली के लिए निर्यातकों, मत्स्य पालन और संबद्ध क्षेत्रों में व्यापारियों, उद्यमियों सहित थोक खरीदारों के साथ एकीकरण करना था। मत्स्य पालन में आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन,





विभिन्न एजेंसियों से जुड़े अनुबंध कृषि मॉडल, भारत में अनुबंध कृषि के अनुभव, ई-एनएएम में मत्स्य क्षेत्र की संभावनाएं और ई-



ट्रेडिंग, समूह अभ्यास, क्षेत्र का दौरा करना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम, डॉ. बि. के. दास, निदेशक के मार्गदर्शन में तैयार किया गया था। इसके समन्वयक डॉ. अरुण पंडित, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. पियाशी देबोरॉय, वैज्ञानिक तथा श्री लोहित कुमार,

पालन जल गुणवत्ता विश्लेषण, चारा तैयार करने और मछली



रोगजनकों की पहचान, जैविक समुदायों के विश्लेषण, आरएस सिस्टम और और हैचरी यूनिट के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रतिभागियों को कुशल मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने का मार्ग की संभावना की जा सकती है।



वैज्ञानिक थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 39 प्रशिक्षुओं (36 पुरुषों और 3 महिलाओं) ने भाग लिया, जो नदिया, पूर्व मेदिनीपुर, बर्दवान और मुर्शिदाबाद जिलों के एफपीओ / एफपीसी के सदस्य हैं।

### अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से बिहार के सारण जिले के मछुआरों का क्षमता निर्माण

ग्रामीण आबादी की आय में वृद्धि के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र के महत्व को समझते हुए, संस्थान ने बैरकपुर में 03 से 09 दिसंबर, 2019 के दौरान बिहार के सारण जिले के मछुआरों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक सप्ताह तक चलने वाले कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 29 मछुआरों ने भाग लिया। उन्हें अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, फीड प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी प्रबंधन, समग्र मछली पालन, मीठा पानी में झींगा पालन, अलंकारी मछली



### कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र में एनएफडीबी प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम

संस्थान के कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र में एनएफडीबी (NFDB) प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 10 से 12 दिसंबर 2019 के दौरान 'अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए आजीविका





सुधार' पर एक प्रशिक्षण का आयोजन किया। कार्यक्रम में 50 मछुआरों ने भाग लिया जिनमें मीठा जल में मछली उत्पादन, भूमि आधारित मछली उत्पादन, छोटे पैमाने पर मछुआरों, अलंकारी मछली पालन और उद्यमी आदि से जुड़े हुए थे। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. वी. कृपा, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभागाध्यक्ष (मत्स्य पर्यावरण और प्रबंधन प्रभाग), आईसीएआर-सीएमएफआरआई ने किया तथा मीठे पानी में मोती पालन तकनीक और अंतर्स्थलीय



मत्स्य पालन में विविधता लाने की आवश्यकता और मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए जीरो डिस्चार्ज एकाकल्चर तकनीक के बारे में बताया। उन्होंने केरल को प्रभावित करने वाले 2018-19 के बाढ़ के बाद एक जलवायु लचीला जलीय कृषि अभ्यास की आवश्यकता पर जोर दिया। कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र की प्रभारी वैज्ञानिक, डॉ. दीपा सुधीसन ने



मछुआरों को पेन और पिंजरा पालन तकनीक, भूमि आधारित मछली उत्पादन प्रणाली, सरकार प्रायोजित योजनाएं और अनुदान और बैंकों से वित्तीय सहायता वाले प्रौद्योगिकियों को बताया।

### बिहार के गोपालगंज जिले के मछुआरों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

बिहार के गोपालगंज जिले के मछुआरों के लिए 17-23 दिसंबर 2019 को 7 दिनों का कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तहत "अंतर्स्थलीय जल में मत्स्य प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 28 मछुआरों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें मिट्टी और जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्राकृतिक

मछली खाद्य जीव, चारा प्रबंधन, सजावटी मछली पालन, मछलियों के प्रजनन पहलू, मछलियों के पोषण संबंधी पहलू, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, आरएएस सिस्टम और हैचरी इकाइयों की गतिविधियों और



कार्यों को विस्तृत तरीके से समझाया गया। निदेशक महोदय ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अर्जित ज्ञान को आगे बढ़ाना चाहिए और मछली पालन के दौरान किसी भी कठिनाइयों का सामना करने पर संस्थान के साथ संपर्क करना चाहिए। उन्होंने मत्स्य क्षेत्र में उद्यमशीलता के अवसरों पर भी जोर दिया जो बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ॰ अर्चन कांति दास, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ॰ दिवाकर भक्त, वैज्ञानिक थे।



• संस्थान में दिनांक 09 से 13 दिसंबर, 2019 तक चार दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम "Advances in enumeration

and taxonomic identification of plankton community in inland open waters" का आयोजन किया गया था। इस प्रशिक्षण में 7 शोधार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।







- जनजाति उप योजना कार्यक्रम के तहत "जलाशय मत्स्य प्रबंधन" पर एक बड़े पैमाने पर जागरूकता कार्यक्रम दिनांक 11



-12 दिसंबर 2019 के दौरान हरंगी जलाशय में किया गया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा विकसित एचडीपीई पेन का प्रदर्शन किया गया था।

- असम के नागांव जिले के समागुरि बील में फील्ड दिवस सह फसल मेला का आयोजन दिनांक 21 दिसंबर, 2019 को



किया गया, जिसमें CIFRI जीआई केज में एक नई उम्मीदवार प्रजाति के रूप में पाले गए लैबियों गोनीयस पालन का प्रदर्शन किया गया।

## डॉ. जी हुआंग, महानिदेशक, एनएसीए (NACA) का संस्थान में आगमन

डॉ. जी हुआंग, महानिदेशक, एनएसीए (Network of Aquaculture Centres in Asia-Pacific) ने 12 दिसंबर, 2019 को संस्थान का दौरा किया। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास ने अपने स्वागत भाषण में संस्थान द्वारा पूरे भारत में मत्स्य पालन को बढ़ाने के लिए की जा रही गतिविधियों और संस्थान द्वारा विकसित अत्याधुनिक तकनीकों के साथ-साथ अंतर्स्थलीय खुलाजल में किए जाने वाले



कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एनएसीए और संस्थान के बीच सहयोग एशिया के इस हिस्से में सामाजिक विकास के लिए अधिक लाभदायी होगा। डॉ. जी हुआंग ने अपने संबोधन में एनएसीए (NACA) के उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में बताया, जिनकी उपस्थिति एशिया-प्रशांत क्षेत्र 19 देशों में महसूस किया जा



रहा है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र की लाभप्रदता के व्यापक प्रसार के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया में एकाकल्चर और मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर अधिक समय देने की आवश्यकता है।

## महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 03-04 दिसंबर 2019 के भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था के कानपुर चैप्टर के राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। छत्रपति शाहू जी महाराज यूनिवर्सिटी, कानपुर में आयोजित इस संगोष्ठी का विषय विज्ञान और प्रौद्योगिकी: ग्रामीण विकास था तथा इसमें







संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास ने लीड लैक्चर प्रस्तुत किया था ।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 06 दिसंबर 2019 को भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक द्वारा आयोजित चावल पारिस्थितिकी से जुड़े स्टेकहोल्डर्स सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन का उद्देश्य ओड़ीशा राज्य में चावल उत्पादन संबन्धित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा राज्य कृषि विषयविद्यालयों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रचार प्रसार करना था।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 दिसंबर 2019 को जल संसाधन परियोजनाओं के पर्यावरण मूल्यांकन और प्रबंधन से संबंधित मानकों को अंतिम रूप देने के लिए भारतीय मानक ब्यूरो, नई दिल्ली की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर दिनांक 13 दिसंबर 2019 को कर्लिंगा इन्स्टीच्युट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलोजी (केआईआईटी विश्वविद्यालय) में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। इसका आयोजन भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन, भुवनेश्वर चैप्टर द्वारा किया गया था और इसमें निदेशक महोदय ने लीड लेक्चर प्रस्तुत किया।



- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 13-15 दिसंबर, 2019 से पश्चिम बंगाल के न्यू दीघा में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन स्मार्ट एक्वा इंडिया 2019 में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 17-19 दिसंबर 2019 के दौरान बिस्वा बंगला कंविमेन्सेन्ट्रे, कोलकाता में पशु पोषण के INCAN 2019 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 17-18 दिसंबर, 2019 के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित निक्का (NICRA) परियोजना के समीक्षा बैठक में भाग लिया।

### अन्य गतिविधियां

- संस्थान मुख्यालय बैरकपुर में एनएसओ प्रायोजित परियोजना "भारत में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन की इनपुट लागत और फार्म गेट मूल्य" पर स्थापना कार्यशाला सह प्रशिक्षण दिनांक 18-19 दिसंबर 2019 के दौरान आयोजित किया गया था।



- संस्थान मुख्यालय बैरकपुर और इसके अधीनस्थ केन्द्रों में दिनांक 16 से 31 दिसंबर 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया जिसमें संस्थान परिसर और आस-पास के इलाकों को साफ और स्वच्छ रखने के साथ एकल प्रयुक्त प्लास्टिक के उपयोग को बंद करने जैसे प्रयास किए गए हैं।
- संस्थान ने दिनांक 22 से 31 दिसंबर 2019 के दौरान सुंदरबन युवा मेला- 2019 में भाग लिया। यह मेला तालडी बहुरूपी संघ, तालडी, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित



किया गया था। इस मेले की प्रदर्शनी में संस्थान के स्टॉल को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्रदान किया गया।



### अंतर-संस्थानिक स्थानांतरण



डा. एस दामराय, प्रधान वैज्ञानिक ने अंतर-संस्थानिक स्थानांतरण के तहत दिनांक 10 दिसंबर 2019 (पूर्वान्ह) संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यभार संभाला है। डा. दामराय इससे पूर्व भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-CARI), पोर्ट ब्लेयर में कार्यरत थे।

### पदोन्नति

श्री किशोर साव को दिनांक 2 दिसंबर 2019 से सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नति दी गयी।



### अंतरा-संस्थानिक स्थानांतरण

डा. संजय कुमार दास ने अंतरा-संस्थानिक स्थानांतरण के तहत दिनांक 24 दिसंबर 2019 (पूर्वान्ह) से संस्थान के मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यभार संभाला है। डा. दास इससे पूर्व संस्थान के कोलकाता केंद्र में कार्यरत थे।



डा. दीबाकर भक्त, वैज्ञानिक ने अंतरा-संस्थानिक स्थानांतरण के तहत दिनांक 16 दिसंबर 2019 (पूर्वान्ह) से संस्थान के मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यभार संभाला है। डा. भक्त इससे पूर्व संस्थान के वडोदरा केंद्र में कार्यरत थे।

### अवकाश प्राप्ति



संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, कोच्चि में कार्यरत डा. श्रीमति रानी पलानीस्वामी, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 1 दिसंबर 2019 (अपरान्ह) को संस्थान की सेवा से स्वेच्छा पूर्वक अवकाश प्राप्त किया। संस्थान उनके भावी जीवन और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद में कार्यरत डा. आर एस श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 9 दिसंबर 2019 (अपरान्ह) को संस्थान की सेवा से स्वेच्छा पूर्वक अवकाश प्राप्त किया। संस्थान उनके भावी जीवन और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यरत श्री सुकुमार सरकार, सहायक ने दिनांक 31 दिसंबर 2019 (अपरान्ह) को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। संस्थान उनके भावी जीवन और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।



संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यरत श्री दिलीप कुमार दास, कुशल सहायक ने दिनांक 31 दिसंबर 2019 (अपरान्ह) को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। संस्थान उनके भावी जीवन और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।

### सम्पादक मंडल की तरफ से

सम्पादन मण्डल के ओर से आप समस्त पाठकों को नए वर्ष की बधाई। आप सभी ने हमारे पिछले अंकों को सराहा और अपने बहुमूल्य सुझाव दिये जिससे हमें इसे और भी रोचक और पठनीय बनाने में सफलता मिली है। आशा है, आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा।

धन्यवाद,

### प्रकाशन मंडल

**प्रकाशक:** बसन्त कुमार दास, निदेशक,

**संकलन एवं सम्पादन:** संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव ताल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

**संकलन एवं सम्पादन सहायता:** मो. कसिम **फोटोग्राफी:** सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल: [director.cifri@icar.gov.in](mailto:director.cifri@icar.gov.in); वेबसाइट: [www.cifri.res.in](http://www.cifri.res.in)